भज निताइ गौर राधे श्याम। जप हरे कृष्ण हरे राम॥

प्रथम पुष्प

प्रथम संस्करण

श्री विष्णुप्रिया चालीसा

यादवेन्द्र

प्रकाशक :

संत क. प. रामानुजदास

कुसुम सरोवर, राधाकुण्ड, [मथुरा]. उ. प्र,

मूल्य नित्य पाठ

Vrindavan Das
Govind Kund, Vrindavan
Nityanand Baba Ashram

श्री राधा नाम कीर्तन

भानुदुलारी जय श्री राधे। रूप उज्यारी जय श्री राधे ।।
तनसुकुमारी जय श्री राधे। कृष्णपियारी जय श्री राधे ।।
सहज-स्वरुपा जय श्री राधे। छटा अनूपा जय श्री राधे ।।
चम्पक वर्नी जय श्री राधे। भव भय हरनी जय श्री राधे ।।
रास विहारिन जय श्री राधे। लीलाकारनि जय श्री राधे ।।
कमल विलोचनि जय श्री राधे। विरह विमोचनि जय श्री राधे ।।
सद गुन आगरि जय श्री राधे। नटवर नागरि जय श्री राधे ।।
पंकज बदनी जय श्री राधे। शोभा-सदनी जय श्री राधे ।।
दाडिम दसना जय श्री राधे। मृदु-मृदु हसनाजय श्री राधे ।।
भूषन धारनि जय श्रीं राधे। करुना कारनि जय श्री राधे ।।

(यादवेन्द्र)

भज निताइ गौर राधे श्याम। जप हरे कृष्ण हरे राम॥

॥ श्रीविष्णुप्रियादेव्यै नमः ॥

दो शब्द

जब भारत भूमि यवनों के असह्य अत्याचार से थर-थर काँप उठी थी, हिन्दू धर्म के मानने वाले अनाथ मानवों से, मानवता को बलात् हरण कर उन्हें दुखद दानवता का सुदृढ़ कवच पहनाया जाता था, हमारे महर्षियों की दिव्य वाणियाँ एवं सद्ग्रन्थों को चाण्डाल भस्म कर रहे थे, संध्या तर्पण एव भगवद् भजन करने वालों को अनेकों भयंकर यातनाएँ भोगनी पड़ती थी, वैष्णव चिह्नों को धारण करने वाले सत महात्माओं को अनेकों असहनीय कष्ट भोगने पड़ते थे। अत्याचारी यवन अनेकों प्रचंड यमराज की तरह

हिन्दू धर्मावलम्बियों के पीछे पड़े थे, भारत की जनता त्राहि-त्राहि पुकार उठी, तब भक्त भयहारी, भगवान वासुदेव अपने भक्तों की रक्षा करने के लिए बंगाल प्रान्त के सुप्रसिद्ध स्थल नदिया (नवद्वीप) में परम भागवत श्रीजगन्नाथ मिश्र की धर्म पत्नी श्री शचीदेवी के गर्भ से अवतरित हुये।

निमाई उनके घर का प्यारा नाम था, विद्या के समुद्र निमाई पंडित ने अनेकों विधर्मियों को शास्त्रार्थ में हरा कर उन्हें वैष्णव धर्म की दीक्षा थी।

जगाई मधाई जैसे महा प्रचंड पापात्माओं का उद्धार केवल मात्र निमाई चाँद के अलावा और कौन कर सकता था उन्होंने हरिनाम का वास्तविक स्वरूप जीवमात्र को प्रतक्ष दरसाया। जड़ को चेतन और चेतन को जड़ करके उन्हीं

भज निताइ गौर राधे श्याम। जप हरे कृष्ण हरे राम॥

पतित पावन प्रेमावतार "प्रेमप्रभु" श्रीगौरांग सुन्दर ने दिखाया। संसार को नश्वर जान श्रीकृष्ण महाभाव प्रकाश के लिए सन्यास ले वे ही महाप्रभु ब्रज में रोदन करते-करते भ्रमण कर तीर्थों, वनों, कुंड सरोवर एवं श्रीकृष्ण लीला के गुह्य रहस्यों का वर्णन करके ब्रज वसुन्धरा को उल्लासित किया। महाप्रभु के अनेकों चरित्र हैं जो गौड़ीय ग्रन्थों में विस्तार से पाये जाते हैं। यहाँ पर तो देवी विष्णुप्रिया का परिचय देने के हेतु थोड़ा सा लिख दिया है।

श्री श्री विष्णुप्रिया देवी इन्हीं कलिपावनावतार 'प्रेम प्रभु' श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु की अभिन्न शक्ति हैं। नित्य प्रिया है। चिरसंगिनी हैं। इन्होंने भी नवद्वीप में सनातन मिश्र के घर को प्रकाशित कर गौरचन्द की प्रभा में अपनी प्रभा को

मिला दिया। ये युग-युग में प्रभु के साथ-साथ अवतरित होकर उनकी लीला में हाथ बटाती रहती है। परम पावन मई माँ ने भगवत भजन का स्वरूप दिखाकर उन असहाय अवलाओं एवं दीन हीनों को भी परम पद का अधिकारी बना ही नहीं दिया बल्कि आगे के लिए जीवों का कल्याण करने वाला मार्ग तैयार कर दिया। परमाराध्या देवी के अनेकों चरित्र हैं, उनको लिखने की शक्ति किसमें है? फिर भी जिसके हृदय में माँ प्रेरणा करे, वह कैसे अपनी लेखनी न उठाये? भाषा का माधुर्य एवं शब्दों का सुन्दर गठन चाहे न हो, एवं कविता दोष-युक्त भले ही हो, किन्तु अपनी रचना सबको प्यारी होती है। लिख ही बैठता है।

यह श्री विष्णुप्रिया चालीसा (स्तव) उन्हीं देवी के

भज निताइ गौर राधे श्याम। जप हरे कृष्ण हरे राम॥

चरणकमलों में आश्रय पाने के लिए लिखा गया है। इस स्तव में माँ को १०८ नामों से बंदना की गयी है। विष्णुप्रिया नामावलि गौड़ीय वैष्णव ग्रन्थों की देन है। भावुक भक्तगण इस स्तव का नित्य-प्रति पाठ करने से पहले एक बार प्रेम से "हरिबोल" कहकर "श्रीविष्णुप्रियादेवीकीजय," पतितपावन मई माँ की जय, श्रीगौरवक्षविलासिनीकी जय, बोलकर पाठ आरम्भ करें।

वे करुणा स्वरूपणी माँ! त्रितापाग्नि से दग्ध होते हुए अपनी असहाय अधम सन्तानों की ओर एकबार अवश्य अपनी कृपा मृत दृष्टि को फेरेगी। उद्धार करेगी। अपनी गोद में लेगी।

यह स्तव माँ (श्रीविष्णुप्रिया के) चरणद्वय में तथा हरि

भक्तों के कर कमलों में एक साथ आश्रय को प्राप्त होगा तभी स्तव रचनाकार एवं प्रकाशक अपने को कृतार्थ समझ लेंगे।

इस स्तव का बंगला भाषा में भी रूपान्तर हो गया है। आशा है कि शीघ्रातिशीघ्र बंगला-भाषी हरि-भक्तों के कर कमलों में पहुँचेगा। इस स्तव के मुद्रण में मथुरा वासी भक्त श्री रामजीलाल जी (भगतजी) ने सम्पूर्ण अर्थ सहायता की है। गौरप्रिया उन्हें आगामी संस्करणों के मुद्रण करा कर हरिभक्तों को निःशुल्क वितरण करने की कृपा करें।

गौर पूर्णिमा
वि० सं० २०३३

विनीत :
संत क. प. रामानुजदास

॥ श्री राधे ॥

नित्य प्रातः स्मर्णीय भक्तमाल अष्टक

दोहा—नित्यानन्द प्रशन्न ह्वै यह वर दीजै आय।
कृष्णदास पद-कंज-रज उड़ि-उड़ि चित परिजाय ॥१॥
भक्तमाल के भक्त सब निज स्वरूप प्रगटाय।
मेरे मानस भवन में बसौ सदा हरसाय ॥२॥
कलप-कलप, युग-युगन के अवलों हरि के दास।
भये अहहि अरू होहि जो मानस करउ निवास ॥३॥
अग्र सहित नाभा चरन प्रनवौ बारम्बार।
भक्त चरित कल्यान-प्रद प्रगटायो सुख सार ॥४॥

हरि हर शक्ती के विविध भये प्रगट अवतार ।
तिनके भक्त उपासक रघुपति भक्त उदार ॥५॥
ब्रज मंडल के इष्टि के तिनके इष्टि अनन्य ।
रहैं एक रस दिवस-निशि उन रसिकन धनि-धन्य ॥६॥
श्यामा श्याम विलास रस छकि छकि कीयो पान ।
तनक कृपा करि रीझिये प्यारे रसिक सुजान ॥७॥
गौर-चन्द्र रस रसिक अलि पीवत रस स्वछन्द ।
तनक चखावौ करि कृपा हृदय होय आनन्द ॥८॥
यह अष्टक नित नेंम सों पढ़ै भोर में कोय ।
यादवेन्द्र विश्वास सह उनको दुःख न होय ॥९॥

हरि बोल

★

श्री विष्णुप्रिया चालीसा

दोहा-गौरचन्द्र मुख चन्द्र रस सदा करै जो पान ।
करूनाध्वजा स्वरूपनी करउ सदा कल्यान ॥

जय जय विष्णुप्रिये गुणखानी ।
चन्द्रमुखी सुभगे सुखदानी ॥१॥

रूप अनूपम तन अभिरामा ।
पंकज-वदनी सुन्दरि स्यामा ॥२॥
सुता सनातन गौर-पियारी ।
कृपा करउ लखि दीन दुखारी ॥३॥
दाडिम-दसनी जय मृदु-हासिनि ।
जय-जय भागीरथि तट वासनि ॥४॥

प्रभावती शोभा जगपावनि ।
सौम्यस्वरूपा जय अघनासनि ॥५॥
प्रेमदायिका प्रमुदा धीरा ।
विविधभूषणा दिव्य सरीरा ॥६॥
चन्द्रानना अमित गुन आगरि ।
जय शचिनन्दन-प्रिया सुनागरि ॥७॥

सरल स्वभावा शक्ति स्वरूपा ।
ललित मनोहर दिव्य अनूपा ॥८॥
चारू शोभना लीला कारनि ।
जय जय सुरधुनि सलिल विहारनि ॥९॥
परमसती जय जय मृगनैनी ।
दयामई भक्तन - सुखदैनी ॥१०॥

कलकण्ठी मुग्धा महामाया ।
करूणामइ माँ कीजिय दाया ॥११॥
मिश्र पुरंदर सुत गुन मंडित ।
आचारज विद्यानिधि पंडित ॥१२॥
जयति निमाई सहित सुसीला ।
करउ सदा तुम नित नव लीला ॥१३॥

रूप अगाधा चरित अनूपा ।
धैर्यधारनी भक्ति - स्वरूपा ॥१४॥
गौरविरहनी जगद् व्यापनी ।
निशि-दिन हरि-हरि नाम जापनी॥१५॥
शक्तिल्हादिनी जय कुलकामनि ।
गौरचन्द्र वर वक्षविलासनि ॥१६॥

भज निताइ गौर राधे श्याम। जप हरे कृष्ण हरे राम॥

पराभक्ति परमेश्वरि जय-जय ।
सती सिरोमनि नागरि जय-जय ॥१७॥
करूणा - क्रन्दनि गौर अधीरा ।
तरलित कञ्चुकि नयन सुनीरा ॥१८॥
जय-जय विरह वियोगिन भोरी ।
गौरचन्द्र मुख नयन चकोरी ॥१९॥

जय जय करूणारस की धारा ।
जय-जय भक्तन प्राण अधारा ॥२०॥
परम पावनी मृदुल - स्वभावा ।
जय स्वर्णाङ्गी जय जग नावा ॥२१॥
नदिया नागरि स्वामिन जय-जाय ।
गौर सुहागिन भामिन जय-जाय ॥२२॥

नील कमल दल लोचनि वामा ।
अरून सरोरूह वदन ललामा ॥२३॥
अगम अनन्त पवित्र विचित्रा ।
महामहिम मा परम-पवित्रा ॥२४॥
गौरभामिनी जागद् कारनी ।
महापातकी सहज तारनी ॥२५॥

वरदायिनि शुभगा सुरसेवी ।
करि रक्षा भव तारनि देवी ॥२६॥
मातु सदैव भक्त पन पारे ।
अतिशय अद्भुत चरित तुम्हारे ॥२७॥
हौं अति अधम पातकी भारी ।
अब तकि आयौ सरन तुम्हारी ॥२८॥

कलि पिशाच व्यापेउ तन मेरे ।
कर्म पास कर दृढ़ गल घेरे ॥२९॥
अनल त्रिताप जरावत भारी ।
त्राहि त्राहि हे गौर पियारी ॥३०॥
जन्म अनेक बहुत दुख पायउ ।
मोह जाल फसि चित घबड़ायउ ॥३१॥

नयन रोगवस दीखत नाहीं ।
भवारण्य भटक्यौ मगमाही ॥३२॥
नासहु तिमिर मोर अज्ञाना ।
दयावती को तुमहि समाना ॥३३॥
भक्तन उर में वास तुम्हारा ।
केवल उनकी तुम्ही सहारा ॥३४॥

भज निताइ गौर राधे श्याम। जप हरे कृष्ण हरे राम॥

जगपावनि कीरत माँ तेरी ।
मात सुरक्षा करि नित मेरी ॥३५॥
जय जुग जुग अवतार धारनी ।
प्रेम स्वरूपा पतित तारनी ॥३६॥
जो तजि कपट विनय करै तेरी ।
आशिष देय करइ नहिं देरी ॥३७॥

जो चालीसा पाठ करइ नित ।
बसहि गौर सुन्दर ताके चित ॥३८॥
श्रीकृष्ण चैतन्य कृपाला ।
सचराचर पति दीन दयाला ॥३९॥
गणन सहित नित वसइ तासु उर ।
करइ चलीसा पाठ निरंतर ॥४०॥

भज निताइ गौर राधे श्याम। जप हरे कृष्ण हरे राम॥

दोहा—गौर-स्वामिनी की कृपा बनी रहै निशिभोर ।
ताके वल निरभय फिरूं ज्यौं केसरी किशोर ॥
विष्णुप्रिये नवनागरी आगरि सद्गुन धाम ।
तेरी पद रज को करै यादवेन्द्र परणाम ॥
द्विय सहस्त्र बत्तीस शशि पूनम आश्वनि मास ।
चालीसा मथुरा पुरी लिखी यमुन तट पास ॥

पुनि-पुनि गौर-प्रिया पद ध्याऊँ ।
अतिसय मृदुल अरुन पंकज से किहि विधि रसना गाऊँ ।।
जेहि रज अंजि नैन रुज भंजउ गौर चरित लखि पाऊँ ।
यादवेन्द्र अभिलाष पुजै जब निशिदिन नीर बहाऊँ ।।

—यादवेन्द्र

श्रीविष्णुप्रिया अष्टक

छन्द—

(१)

जयति श्रीचैतन्य पद अरविंद मकरन्द मधुकरी ।
जयति करुना भाव रस की धार अगनित गुनभरी ।।
सुख-शांति भक्ति-दायिका रस सिन्धु सद्गुन आगरी ।
पिय प्रेम रस सर हंसिनी विष्णुप्रिये नव-नागरी ।।

(२)

नदिया विहारनि विमल सुरसरि सुभग तट वर गेहनी ।
आधार भक्तन प्रान की भव विषम सरिता खेहनी ।।
जयति जय पितु-मात पिय के सहस कुल सुउजागरी ।
पिय प्रेम - रस सर हंसिनी विष्णुप्रिये नव - नागरी ।।

(३)

अनुरागिनी सिधि दायिनी देवी सनातन बालिका ।
त्रियलोक पावन यश भरी पिय वचन की दृढ़ पालिका ।।
हरिनाम निर्मल सरस धारा पतित पावन सुरसरी ।
पिय - प्रेम रस सर हंसिनी विष्णुप्रिये नव-नागरी ।।

(४)

करुनामयी जगदम्बिके दृष्टी कृपा की कीजिए ।
कलि के अधम जीवों को अपनी चरण रज को दीजिए ।।

जिह्वा सदा रटती रहे गोविन्द माधव प्रभु हरी ।
पिय - प्रेम रस सर हंसिनो विष्णुप्रिये नव-नागरी ।।

(५)

जयति भव्ये दिव्य ज्योति भाव - प्रफुलित बल्लरी ।
गौरांग शशि - मुख चातकी प्रेमाम्बु निर्मल निर्झरी ।।
सहज - सरला चतुर गोरी प्रमुदिता बहु गुन भरी ।
पिय प्रेम रस सर हंसिनी विष्णुप्रिये नव - नागरी ।।

(६)

जयति श्रध्ये शक्ति माया सहज में वर दायिनी ।
दीजे कृपा करि भक्ति पद में नाथ के अनुपायिनी ।।
कलुषित कलेवर कुटिल कलि के हेतु पावन अवतरी ।
पिय - प्रेम रस सर हंसिनी विष्णुप्रिये नव-नागरी ।।

जयति तरलित नयन कञ्चुकि कृष्ण कहि महि गिरि परैं ।
पुनि उठत - बैठत हँसत - रोवत नाम "हरि" सुमिरन करैं ।।
गद्गद् कहत हा ! प्राणबल्लभ, कौन पातक परिहरी ?
पिय - प्रेम रस सर हंसिनी विष्णुप्रिये नव - नागरी ।।

(८)

आल्हादिनी शक्ती - परे अवतार युग-युग धारनी ।
जय - उद्भवा लीलामई अगनित अधम उद्धारनी ।।
यादवेन्द्र पातक मुकट-मनि लखि अम्ब कितको तुम दुरी ।
पिय प्रेम रस सर हंसिनी विष्णुप्रिये नव - नागरी ।।

दोहा—भाव सहित अष्टक सदा पाठ करैं चितलाय ।
तापै रीझै करि कृपा देय अभीष्ट वर ताय ।।

श्री विष्णुप्रिया अष्टक—२

दोहा—

जय जय शचिनन्दन प्रिया, देवी परम उदार ।
अम्ब अनुग्रह कीजिये, प्रनवौ बारम्बार ।।१।।

गौर - भक्त - अवलम्बनी, अब जिन कीजै बेर ।
दयामई भय - भीत की, स्वामिनि सुनिये टेर ।।२।।

नव नव सरस विनोदनी, करत केलि नवरग ।
अरुण - तरुण - पंकज - मुखी, उलझी पिय के अंग ।।३।।

नदिया शशि अथवत रखे, भक्त कुमुद गन प्रान ।
बिछुरत पिय तन नहिं तज्यौ, करन भक्त कल्यान ।।४।।

वदन नाम अनुराग हिय, नयन तरल पिय ध्यान ।
मिश्र पुरंदर सुत बधू, देहु भक्ति को दान ॥५॥

सरिता सुरवर तट कुटी, तहँ तुलसी के वृन्द ।
पद-पंकज प्रिय पादुका, सेवहि सह आनन्द ॥६॥

पिय वियोग दुख मात-पितु, शचिमा विरह अपार ।
पुरजन, रसिकन, भक्तगन, देवि तुमहि आधार ॥७॥

कलि के कलुष निकंदनी, पराशक्ति जग मूल ।
विष्णुप्रिया पिय के सहित, रहहु सदा अनुकूल ॥८॥

ब्रजप्रसिद्ध गिरिराज वर, सुभग कुसुम सर तीर ।
यादवेन्द्र अष्टक रचेउ, समन करन भव पीर ॥९॥

प्रथम मिलन (गौर विष्णुप्रिया) ध्यान

दोहा—

गौरचन्द्र मुख चन्द्र वर लखि सकुचत नव बाल ।
मन्द बजत पग पैंजनी लिए हाथ जय माल ॥
प्रथम मिलन अनुराग अति करि कछु नीचे नैंन ।
यह छवि रसिकन चित बसै गौर-प्रिया दिन रैन ॥

—यादवेन्द्र

नमो विष्णुप्रिया देव्यै,
शुद्ध बुद्धि प्रदायनीम् ।
गौर शक्ति भक्ति विग्रह,
महालक्ष्मी पाहिमाम् ॥

—यादवेन्द्र

हरिबोल — हरिबोल — हरिबोल

भज नितांत गौर श्याम। जय हे कृष्ण हे राम।

श्री यादवेन्द्र की कुछ प्रमुख रचनाएं

१. सरसबेली
२. माधव मंजरी
३. मानस मराली
४. केवट विनोद
५. अंजनी के लाल
६. जामवंत
७. मानस के मोती
८. कवित्त रत्नावली
९. रस माधुरी
१०. राष्ट्रीयगीत
११. गिरीज के अंचल में
१२. शारदा छंद
१३. सरस्वती सहस्रनाम
१४ ज्योतिष पदावली
१५ प्रथम मिलन
१६ अवधूतका
१७. अलवेली
१८. मीरा विलास
१९. विरही पथिक
२०. बिरहानल अदि

नोट—ये सभी अमूल्य रत्न अप्रकाशित हैं।

श्री यादवेन्द्र रचित नित्यपाठोपयोगी पुस्तकें

—: प्रकाशित :—

१. श्री गिर्राज महिमामृत
२. श्री राधा चालीसा
३. श्री जानकी चालीसा
४. श्री दुर्गा चालीसा
५. श्री गिर्राज चालीसा
६. श्री लक्ष्मी चालीसा
७. श्रीकृष्ण चालीसा
८. श्री विष्णुप्रिया चालीसा
९. श्री राधावल्लभ षोड़सी
१०. श्री विष्णु प्रिया स्तव

—: अप्रकाशित :—

१. श्री सूर्य चालीसा
२. श्री वल्देव चालीसा
३. श्री गणेश चालीसा
४. श्री शिव चालीसा
५. श्री सरस्वती चालीसा
६. श्री नारद चालीसा